



ISSN 0973-2616



# प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 7 अंक 6

[www.csir.res.in](http://www.csir.res.in)

जून 2019

## सीएसआईआर-नीरी में एक विशिष्ट अपशिष्ट प्रबंधन पार्क का निर्माण



पार्क का एक दृश्य

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी), नागपुर ने अपने 61वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर 08 अप्रैल 2019 को एक विशेष अपशिष्ट प्रबंधन पार्क नागपुर को समर्पित किया। इस पार्क को एक एनजीओ स्वच्छ एसोसिएशन की सहभागिता के साथ स्थापित किया गया तथा इसका उद्घाटन डॉ. शेखर सी मांडे, महानिदेशक, सीएसआईआर के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस पार्क का प्रमुख फोकस लोगों को न्यूनीकरण, पुनर्प्रयोग, पुनर्चक्रण तथा कचरे के पृथक्करण द्वारा प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जागरूक करना है। यह पार्क स्वयं में अपशिष्ट को प्रभावी रूप से उपयोगी उत्पादों के रूप में परिवर्तित करने का एक आकर्षक नमूना है।

अपशिष्ट प्रबंधन पार्क यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार अपशिष्ट का प्रबंधन, न्यूनीकरण तथा सौन्दर्यीकरण किया जा सकता है। इस पार्क में दो झोपड़ी हैं जो ज्ञान के केन्द्र के रूप में यह बताती हैं कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट जैसे-हानिकारक अपशिष्ट, विनिर्माण तथा तोड़-फोड़ संबंधी अपशिष्ट, बायोमेडिकल/रद्दी अपशिष्ट इत्यादि का किस प्रकार प्रबंधन, पुनर्चक्रण किया जा सकता है तथा साथ ही साथ यह भी प्रदर्शित करती हैं कि अपशिष्ट उत्पादन को कम करने में किस प्रकार एक नागरिक अपना योगदान दे सकता है। इस पार्क के मुख्य आकर्षणों में पुरानी प्रयोगशाला सिंक से बनाया गया जल फव्वारा, स्क्रेप फाइबर स्लाइड से बनाई गई एक स्त्री की लघु मूर्ति है।

इस पार्क में एक कम्पोस्ट पिट है जो जैविक अपशिष्ट को पोषक बाहुल्य पदार्थ (कम्पोस्ट) में परिवर्तित करता है। इस पार्क में गीले, सूखे तथा हानिकारक तथा ई-कचरा से संबंधित विस्तृत सूचनाएं प्रदर्शित की गई हैं।

किसी भी शहर को स्वच्छ रखने में जन-भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है तथा सीएसआईआर-नीरी ने अपनी इस परियोजना के साथ इसे आमजन के लिए खोलने के साथ लोगों को इसके बारे में जानने और लोगों को अपशिष्ट प्रबंधन से सम्बद्ध करने का एक उत्कृष्ट मार्ग सुझाया है। आम जनता तथा मुख्य रूप से बच्चे जो इस पार्क को देखने आएंगे उन्हें यह संदेश मिलेगा कि वे कहीं भी गंदगी न फैलाएं।

## सीएसआईआर-निस्केयर ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया



Council of Scientific & Industrial Research  
National Institute of Science Communication and Information Resources, New Delhi

**National Science Day Celebration 2019**

Panel Discussion

**Indian Scholarly Journals: Contemporary Issues and Aspects**

Panelists

**Prof. Amitabh Joshi**, Editor of Publications, Indian Academy of Sciences, Bangalore  
**Dr. Archana Thakur**, Joint Secretary, University Grants Commission, New Delhi  
**Dr. Praveen Arora**, Scientist 'G' & Head, CHORD, Department of Science and Technology, New Delhi  
**Shri Madhavendra Narayan**, Associate Editor, Indian National Science Academy, New Delhi

Panel Chair  
**Dr. Krishan Lal**  
Former President, Indian National Science Academy, New Delhi

February 27, 2019 at 11:00 am

Conference Hall, CSIR-NISCAIR  
Dr. K. S. Krishnan Marg, Pusa, New Delhi-110012

**अनुसंधान** पत्रिकाएं विद्वतापूर्ण संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम होती हैं। भारत में बड़ी संख्या में अनुसंधान पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं परन्तु जैसा कि ज्ञात है कि इनमें से अधिकतर पत्रिकाओं का कोई इम्पैक्ट फैक्टर नहीं होता अथवा बहुत कम होता है। इसके अलावा, अभी हाल ही के वर्षों में भारतीय विद्वतापूर्ण अनुसंधान पत्रिकाओं का परिदृश्य बहुत-सी प्रीडेटरी अनुसंधान पत्रिकाओं की तीव्र वृद्धि से धूमिल हो चुका है। इससे सम्बन्धित सभी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2019 के अवसर पर पैनल चर्चा का आयोजन किया।

पैनल परिचर्चा में प्रोफेसर किशन लाल, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

(इन्सा) ने परिचर्चा की अध्यक्षता की। प्रोफेसर अमिताभ जोशी, प्रकाशन सम्पादक, भारतीय विज्ञान अकादमी (आईएएससी), बंगलुरु; डॉ अर्चना ठाकुर, संयुक्त सचिव (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग); डॉ प्रवीण अरोड़ा, वैज्ञानिक-जी, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) तथा श्री माधवेन्द्र नारायण, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इन्सा) इस परिचर्चा के पैनलिस्ट थे।

अपने स्वागत सम्बोधन में डॉ मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा कहा कि निस्केयर बहुत सी अनुसंधान पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है तथा दोनों अकादमी यथा आईएएससी तथा इन्सा भी इसी प्रकार की पत्रिकाएं प्रकाशित करती हैं और यह पैनल



डॉ मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निरकेयर जनसमूह को सम्बोधित करते हुए



प्रोफेसर किशन लाल अपने विचार प्रस्तुत करते हुए

परिचर्चा अपने अनुभव साझा करने तथा डीएसटी तथा यूजीसी द्वारा इस दिशा में लिए गए नीति सम्बन्धी प्रारम्भों की चर्चा करने का एक अवसर प्रदान करता है।

डॉ किशन लाल ने पैनल परिचर्चा का आरम्भ करते हुए राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर उपस्थित सभी जनों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने सर सी वी रामन के जीवन से जुड़ी घटनाओं को साझा करते हुए रामन इफैक्ट की खोज के किस्से को भी उपस्थित जनसमूह के साथ साझा किया। उन्होंने अनुसंधान पत्रिकाओं के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

प्रोफेसर अमिताभ जोशी ने पीयर रिव्यू के मुद्दे को विशेषकर आज के परिदृश्य में पीयर रिव्यू करने में बढ़ती परेशानियों को उठाया। प्रोफेसर जोशी ने भारतीय विज्ञान अकादमी (आईएएससी) को स्प्रिंगर के साथ मिलकर अकादमी की अनुसंधान

पत्रिकाओं को छपवाने से संबंधित सकारात्मक अनुभवों को भी साझा किया।

डॉ अर्चना ठाकुर, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभी हाल ही में लागू शैक्षिक तथा अनुसंधान नीति (एआरई) कार्यक्रम के कन्सोशियम के विषय में विस्तार से जानकारी दी जिसका लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान पत्रिकाओं की एक संदर्भ सूची प्रबन्धित करना है। उन्होंने सभी उपस्थित जनों को केयर कार्यक्रम हेतु अपने विचार देने के लिए भी आमंत्रित किया।

डॉ प्रवीण अरोड़ा ने डीएसटी द्वारा अनुसंधान प्रकाशनों पर अभी हाल ही



डॉ अर्चना ठाकुर सम्बोधित करते हुए

में आयोजित एक विचारावेश सत्र का संक्षिप्त में वर्णन किया जिसमें अनुसंधान पत्रिकाओं के विविध पहलुओं जिसमें



डॉ प्रवीण अरोड़ा



श्री माधवेन्द्र नारायण



प्रकाशन ओपन एक्सेस: दी रोड टू फ्रीडम का विमोचन

में सहायता कर सकती है।

श्री माधवेन्द्र नारायण, इन्सा ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि सम्पादकों के संघ जिसमें भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिकाओं के सम्पादक सम्मिलित हो, का गठन किया जा सकता है।

भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा भारतीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु वरीयता न देना इत्यादि भी सम्मिलित हैं। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि कोई प्रमाणन संस्था अच्छी गुणवत्ता की अनुसंधान पत्रिकाओं को प्रमाणित करने

इससे पहले एक प्रकाशन ओपन एक्सेस:दी रोड टू फ्रीडम जिसका सम्पादन सीएसआईआर-आईआईसीबी के डॉ एन सी घोष ने किया है, को भी इस अवसर पर विमोचित किया गया।

## सीएसआईआर-निस्केयर ने पृथ्वी दिवस समारोह का आयोजन किया

प्रतिवर्ष पृथ्वी दिवस, प्रकृति तथा इसके महत्व को समाविष्ट करने वाले वैश्विक आन्दोलन, को एक अरब से भी अधिक लोगों द्वारा 22 अप्रैल को मनाया जाता है। सीएसआईआर-निस्केयर ने भी इस अवसर पर 22 अप्रैल 2019 को विज्ञान सूचना भवन, सत्संग विहार मार्ग, नई दिल्ली में एक पैनल चर्चा, जिसका विषय वैदर फॉरकास्ट टू वैदर स्मार्ट था, का आयोजन किया।

जाने-माने विशेषज्ञ डॉ एस डी अत्री, उपमहाप्रबन्धक, एग्रोमेट एडवायजरी सर्विस डिवीजन, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, नई दिल्ली तथा डॉ एस के वाष्ण्य, सलाहकार तथा प्रमुख, अन्तरराष्ट्रीय द्विपक्षीय सहयोग, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली ने इस समारोह में भाग लिया।

पैनल चर्चा की अध्यक्षता करते हुए डॉ मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर ने कहा कि किसानों का सशक्तिकरण करने की आवश्यकता है ताकि वे मौसम की भविष्यवाणियों को समझ सकें। उन्होंने यह



डॉ मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर डॉ एस डी अत्री, उपमहाप्रबन्धक, एग्रोमेट एडवायजरी सर्विस डिवीजन, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, नई दिल्ली तथा डॉ एस के वाष्ण्य, सलाहकार तथा प्रमुख, अन्तरराष्ट्रीय द्विपक्षीय सहयोग, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग,

भी कहा कि विज्ञान संचार किसानों, यहां तक कि आम जनता की भी सहायता कर उन्हें मौसम कुशल बना सकता है।

मानव अन्य प्रजातियों के प्रति असहनशील हैं डॉ एस के वाष्ण्य ने वैश्विक विध्वंस के मानवजनित कारणों पर अपना दृष्टिकोण रखते हुए कहा। उन्होंने चर्चा

की कि अन्तरराष्ट्रीय सहयोग किस प्रकार ग्लोबल वार्मिंग तथा तीव्र जलवायविक घटनाओं के लिए प्रभावी समाधान प्रदान कर सकता है। उन्होंने जलवायु परिवर्तनों तथा ग्लोबल वार्मिंग से सम्बन्धित मुख्य अन्तरराष्ट्रीय सहयोगों तथा सन्धियों में भारत की भूमिका के साथ-साथ पूर्व





## सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की में 'विस्मित विज्ञान सप्ताह' का आयोजन

जिज्ञासा विद्यार्थी-वैज्ञानिक संयोजन कार्यक्रम के तहत सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने 22-26 अप्रैल 2019 के दौरान विस्मित विज्ञान सप्ताह का आयोजन किया। डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और जिज्ञासा कार्यक्रम समन्वयक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के संयोजन में सीबीआरआई के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की टीम ने उत्तराखंड राज्य के विद्यार्थियों और शिक्षकों को विज्ञान के अद्भुत तथ्यों, महान वैज्ञानिकों के जीवन तथा नई और विकासशील तकनीकियों के विषय में जानकारी प्रदान की; विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बंधित विषयों पर चर्चा और विचार-मंथन किया; तथा भवन निर्माण विज्ञान से संबंधित विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया।

सप्ताह का शुभारम्भ विश्व पृथ्वी दिवस 2019 के अवलोकन के साथ हुआ, जिसके अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की की टीम ने चिल्ड्रेन्स सीनियर एकैडमी, रुड़की में नौ से बारहवीं की कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से वार्तालाप किया, उन्हें पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा हेतु सभी प्राणियों के संरक्षण के महत्व के बारे में बताया और इस दिशा में सीएसआईआर द्वारा

चेतावनी प्रणालियों में भारत की तकनीकी प्रौन्नतियों पर भी प्रकाश डाला।

डॉ एस डी अत्री ने ग्राफिकल प्रस्तुतिकरण के द्वारा दर्शाया कि प्रभाव आधारित भविष्यवाणी कैसे मौसम की भविष्यवाणी हेतु अच्छी सुलभता बन सकती है। उन्होंने विस्तार से जलवायु, मौसम, जलवायु परिवर्तनों के कारणों, विभिन्नी अल्पीकरण नीतियों उनके प्रभाव तथा परिणाम पर चर्चा की। उन्होंने जलवायु भविष्यवाणियों में अस्थिरताओं यथा स्थानीय जलवायु परिवर्तनों की भविष्यवाणी में अयोग्यताओं को भी साझा किया।

पैनल चर्चा के पश्चात परस्पर

प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन हुआ। चर्चा में मौसम, जलवायु, जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग अन्य पर्यावरणीय मुद्दों पर भारत की स्थिति जैसे विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया।

विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं, विज्ञान समर्थकों, वैज्ञानिकों, विज्ञान संचारकों तथा मीडिया कर्मियों ने इस समारोह में भाग लिया।

डॉ जी महेश, प्रमुख, सूचना तथा मानव संसाधन विभाग, सीएसआईआर-निरुकेयर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

अन्त में, परिसर में इस अवसर पर वृक्षारोपण भी किया गया।



कक्षाओं में विद्यार्थियों को व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ अतुल कुमार अग्रवाल

किए जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान की।

‘धरती पर मौजूद हर प्राणी किसी न किसी पर आश्रित है। जीवन चक्र में हर प्रजाति का अपना एक अलग महत्त्व और एक अनूठी भूमिका है। हमारा अस्तित्व प्रकृति के इस सुंदर संतुलन को बनाए रखने पर निर्भर करता है।’ उक्त वाक्य डॉ अतुल कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों से वार्तालाप करते हुए कहा। उन्होंने ‘पृथ्वी पर लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण’ विषय

पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों को बताया कि विनाशकारी मानव गतिविधियों जैसे कि मानव उपभोग या खेल के लिए प्रजातियों के शोषण, वनों की कटाई, आवास की हानि, तस्करी और अवैध शिकार, प्रदूषण और कीट नाशकों आदि ने

वनस्पति और वन्यजीव को तेजी से कम कर इनकी आबादी को खतरे में डाल दिया है तथा प्रकृति के इस संतुलन को बिगाड़ दिया है। डॉ अग्रवाल ने विद्यार्थियों को विलुप्त होने के कगार पर खड़ी प्रजातियां जैसे - कोरल रीफ, हाथी, जिराफ, व्हेल, भारतीय चीता तथा गुलाबी सिर वाली बतख आदि के संरक्षण हेतु शब्दों, लेखों, जागरूकता और अभियानों द्वारा एक साथ आने का आह्वान किया। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी दैनिक गतिविधियों

में सुधार करते हुए व्यक्तिगत कार्बन पदचि को कम कर पर्यावरण और जीव संरक्षण में रोज अपना योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

डॉ अग्रवाल ने लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के लिए सीएसआईआर द्वारा किये गए कार्यों जैसे - लुप्तप्राय वन्य-प्राणी प्रजाति संरक्षण प्रयोगशाला (लैकॉन्स) की स्थापना आदि - कार्यों के विषय में भी जानकारी दी। उन्होंने सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किये गए अनुसंधान



शिक्षकों व अतिथियों सहित प्रतिभागी विद्यार्थी



शिक्षकों को व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ अतुल कुमार अग्रवाल

एवं विकास कार्यों की जानकारी भी दी।

विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और शिक्षकों ने सतत विकास और जलवायु परिवर्तन को कम करने पर चर्चा की। कार्यक्रम में चिल्ड्रेन्स सीनियर एकेडमी, रुड़की के लगभग 475 विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ मौजूद रहे।

विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु नवीन शैक्षिक योजनों और तरीकों पर चर्चा करने के उद्देश्य से सप्ताह के दौरान सीएसआईआर-सीबीआरआई में एक शिक्षक-वैज्ञानिक विज्ञान सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शिक्षकों को संस्थान द्वारा विज्ञान के विभिन्न विषयों में किए जा रहे कार्यों से अवगत कराया गया। सीमित समय-अवधि में - प्रभावी परस्पर संवादात्मक शैक्षिक गतिविधियों तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के शिक्षण - दोनों के बीच संतुलन बनाए रखने हेतु संभव समाधानों पर भी शिक्षकों ने चर्चा की।

शिक्षकों से वार्तालाप करते हुए, डॉ अतुल अग्रवाल ने 'विज्ञान शिक्षण में रोचक तथ्य तथा हास्य कथाओं का सम्मिश्रण' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने शिक्षकों को बताया कि विज्ञान अपने आप में बेहद रोचक है किंतु वर्तमान विज्ञान शिक्षण के नीरस तरीकों तथ्यों का अपर्याप्त ज्ञान तथा रट्टा मारने की प्रथा के चलते विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति भय का विकास हुआ है। इसलिए इस भय का प्रतिकार करने तथा शिक्षण में पाठ्यचर्चा के दौरान नीरसता को कम करने के लिए शिक्षकों को विज्ञान पर आधारित चुटकुलों और वैज्ञानिकों के जीवन से सम्बंधित हास्य-विनोद के क्षणों को विद्यार्थियों के साथ साझा कर कक्षा में जीवंतता बनाने का प्रयास करना चाहिए।

सभी शिक्षकों ने सीबीआरआई की समृद्ध प्रयोगशालाओं का दौरा करते हुए संस्थान द्वारा विकसित उन्नत भवन निर्माण सामग्रियों जैसे फॉस्फेट बॉडेड ईटें, बायो-

कंक्रीट ब्लॉक, विध्वंस अपशिष्ट से भवन ब्लॉक, कोटा स्टोन टाइल आदि, अग्नि व जल रोधी कैनवास, तरल अग्निशमन रसायन, आग प्रतिरोधी दरवाजे, प्रदूषण निगरानी और अपशिष्ट प्रबंधन आदि के विषय में जानकारी प्राप्त की तथा संस्थान के वैज्ञानिकों से वार्तालाप द्वारा अपने संशयों को दूर किया। शिक्षकों ने संस्थान की प्रौद्योगिकी दीर्घा का भी अवलोकन किया।

इस अवसर पर उत्तराखंड राज्य के 23 केंद्रीय विद्यालयों- केन्द्रीय विद्यालय - गोपेश्वर, अपर कैंप देहरादून, एसएसबी श्रीनगर, हल्द्वानी शिफ्ट प्रथम और द्वितीय, रानीखेत, राजगढ़ी, ग्वालदम, जोशीमठ, ओएलएफ देहरादून, आईआईपी देहरादून, कौसानी, ओएनजीसी देहरादून, बीएचईएल हरिद्वार, ऋषिकेश, अल्मोड़ा, बागेश्वर, एनएचपीसी बनबसा, धारचूला, पिथौरागढ़, आईटीबीपी द्वितीय शिफ्ट देहरादून, सहित केवी न. एक और न. दो, रुड़की के शिक्षकों ने प्रतिभागिता की।

एक जीवंत शोध-आधारित शिक्षण अनुभव की झलक से प्रेरित कर युवा मन में वैज्ञानिक स्वभाव पैदा करने के उद्देश्य से सप्ताह के दौरान सीएसआईआर-सीबीआरआई में एक विद्यार्थी-वैज्ञानिक विज्ञान सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संस्थान द्वारा विज्ञान के विभिन्न विषयों में किए जा रहे कार्यों से अवगत कराया गया।

विद्यार्थियों से वार्तालाप करते हुए, डॉ अतुल अग्रवाल ने 'हमारे वैज्ञानिक-हमारे प्रेरणा स्रोत' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत के महान वैज्ञानिकों - डॉ. शांति स्वरूप भटनागर, एस. रामानुजन, होमी जहाँगीर भाभा, डॉ. विक्रम साराभाई, प्रो. एम.जी.के. मेनन,



सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की की प्रयोगशालाओं तथा प्रौद्योगिकी दीर्घा का दौरा करते शिक्षक

सर सी.वी. रमन, डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ लालजी सिंह आदि के जीवन से जुड़े रोचक वाक्यों को विद्यार्थियों के साथ साझा कर उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने सर सीवी रमन के एक कथन को समझाते हुए कहा कि एक उद्देश्य पूर्ण जीवन के लिए एक लक्ष्य का होना अति आवश्यक है - ऐसा लक्ष्य जो हमारे जीवन के लिए एक धुरी का काम करें। डॉ अग्रवाल ने बताया कि सर सीवी रमन बचपन से ही विज्ञान में बहुत रुचि रखते थे - उनका मानना था कि हमारी प्रकृति ही विज्ञान का स्रोत है यदि हम सही प्रश्न पूछें तो प्रकृति हमारे लिए विस्मितकारी विज्ञान के नवीन खजाने खोल देगी, आवश्यकता है तो मात्र प्रश्न पूछने तथा उसके उचित उत्तर को प्राप्त करने के जूनून और साहस की। सर सी.वी. रमन का मानना था कि असफलता से निराश नहीं होना चाहिए, सफलता उसी को प्राप्त होती है जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरे साहस और निष्ठा के साथ कार्य करते हैं।

सभी विद्यार्थियों ने सीबीआरआई की समृद्ध प्रयोगशालाओं - भवन दक्षता प्रयोगशाला; अग्नि अनुसंधान

प्रयोगशाला; निर्माण की प्रक्रिया, संयंत्र और उत्पादकता प्रयोगशाला; पर्यावरण विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला; तथा ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा करते हुए संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का अवलोकन किया तथा वैज्ञानिकों से वार्तालाप द्वारा अपने संशयों को दूर किया। विद्यार्थियों ने संस्थान की प्रौद्योगिकी दीर्घा का भी अवलोकन किया।

इस अवसर पर उत्तराखंड राज्य के 23 केंद्रीय विद्यालयों - केन्द्रीय विद्यालय - गोपेश्वर, अपर कैम्प देहरादून, एसएसबी श्रीनगर, हल्द्वानी शिफ्ट प्रथम और द्वितीय, रानीखेत, राजगढ़ी, ग्वालदम, जोशीमठ, ओएलएफ देहरादून, आईआईपी देहरादून, कौसानी, ओएनजीसी देहरादून, बीएचईएल हरिद्वार, ऋषिकेश, अल्मोड़ा, बागेश्वर, एनएचपीसी बनबसा, धारचूला, पिथौरागढ़, आईटीबीपी द्वितीय शिफ्ट देहरादून, सहित केवी न. एक और न. दो, रुड़की से 200 से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की एक टीम ने कैंटोमेंट बोर्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रुड़की में विद्यार्थियों को मलेरिया की

बीमारी और इसके रोकथाम के तरीकों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए जानकारी प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा इस समस्या से सम्बंधित नवीन विचारों, रिपोर्टों, सर्वेक्षणों आदि को प्रस्तुत करने का आवाहन किया ताकि वैज्ञानिकों को समस्या का व्यवहार्य समाधान विकसित करने में मदद मिल सके।

विद्यार्थियों से वार्तालाप करते हुए, डॉ अतुल कुमार अग्रवाल ने 'मच्छर, मलेरिया और हम' विषय पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया और संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छरों के काटने से लोगों को प्रेषित परजीवियों से होने वाली इस जानलेवा बीमारी की गंभीरता को समझने में विद्यार्थियों की सहायता की। हालांकि मलेरिया से बचा जा सकता है और इसका इलाज भी संभव है, फिर भी प्रति वर्ष 85 से अधिक देशों में - लगभग एक लाख मौतों के साथ - मलेरिया के 10 करोड़ से अधिक मामले सामने आते हैं। डॉ अग्रवाल ने मलेरिया के लक्षणों तथा संचरण को रोकने व कम करने के उपायों जैसे कि कीटनाशक-उपचारित मच्छरदानी, इनडोर



सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के साथ प्रतिभागी शिक्षकगण

उन्होंने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के बढ़ते क्षेत्र में अध्ययन - विशेष रूप से सूचना के भंडारण, पुनर्प्राप्ति और प्रसारण हेतु नवीन उत्पादों को विकसित करने के लिए छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए बताया कि आईसीटी स्वयं एक प्राथमिक अनुसंधान विषय के साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक सहायक उपकरण के रूप में अतिआवश्यक

अवशिष्ट छिड़काव और मलेरिया-रोधी दवाओं आदि के बारे में चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को इस दिशा में सीएसआईआर के प्रयासों के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि सीएसआईआर ने एक दवाई - आरटेथर - विकसित की है, जो कि ई-मल नामक एक इंजेक्शन के रूप में उपलब्ध है - यह रोगियों को पी. फाल्सीपेरम मलेरिया व सेरिब्रल मलेरिया के बेहद गंभीर मामले

में उपचार की दूसरी पंक्ति के रूप में उपलब्ध है। इसके साथ ही मलेरिया रक्त सूकंदन के उपचार प्रदान करने वाली नई और बेहतर दवाओं के विकास के लिए अनुसंधान प्रक्रियाधीन है।

इसके साथ ही, डॉ अतुल कुमार अग्रवाल ने स्कूल की छात्राओं के लिए विशेष 'आईसीटी में छात्राओं के लिए अवसर' पर एक प्रस्तुति भी दी जिसमें

हो गया है। उन्होंने सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किये गए अनुसंधान एवं विकास कार्यों की जानकारी भी दी।

कार्यक्रम में कैटोमेंट बोर्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रुड़की के लगभग 300 विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के साथ भाग लिया।

सप्ताह का समापन विश्व बौद्धिक संपदा दिवस 2019 के अवलोकन के साथ



सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के साथ प्रतिभागी विद्यार्थी



कैंटोमेंट बोर्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रुड़की में विद्यार्थियों को व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ अतुल कुमार अग्रवाल

भूसी प्लास्टिक लकड़ी, पाइन नीडल बोर्ड, अरहर डंडल से निर्माण सामग्री की तकनीकय जोपोलीमर कंक्रीट से ब्लॉकय विध्वंस कचरे से टाइल और पावेर ब्लॉकय कोटा स्टोन अपशिष्ट से टाइल आदि अनेक पर्यावरण अनुकूल भवन निर्माण सामग्रियों का विकास किया है।

विश्व बौद्धिक संपदा दिवस 2019 के अवसर पर, डॉ अतुल कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को बौद्धिक संपदा (आईपी) - अर्थात ज्ञान संसाधन जैसे आविष्कार, साहित्यिक कार्य, डिजाइन आदि की अवधारणा से परिचित कराया। उन्होंने बताया कि बौद्धिक संपदा - पेटेंट, कॉपीराइट और ट्रेडमार्क आदि के द्वारा कानूनी रूप से संरक्षित की जाती है ताकि आविष्कारकों को अपने कार्यों के लिए मान्यता या वित्तीय लाभ प्राप्त हो सके। ऐसा करने से अवशिकारकों और जनमानस दोनों को बराबर का लाभ प्राप्त होता है तथा एक रचनात्मक और अभिनव वातावरण को भी बढ़ावा मिलता है। नए ज्ञान का सृजन और बौद्धिक संपदा की रक्षा करना सीएसआईआर के मुख्य उद्देश्यों में से एक रहा है। इस संबंध में, सीएसआईआर ने कई विदेशी शोधकर्ताओं/कंपनियों से भारत के पारंपरिक ज्ञान-जैसे बासमती चावल, हल्दी के अनुप्रयोग आदि की भी रक्षा की है और इसी कड़ी में पारंपरिक ज्ञान के आधार पर नवाचारों के लिए पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना भी की है। गत वर्ष, सीएसआईआर को 'टॉप आरएंडडी इंस्टीट्यूशन/ऑर्गनाइजेशन फॉर पेटेंट्स एंड कमर्शियलाइजेशन' श्रेणी में राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा (आईपी) पुरस्कार 2018 से सम्मानित भी किया गया था।

कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालयों न. 1, रुड़की के लगभग 100 विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के संग प्रतिभागिता की।

हुआ, जिसके अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के वैज्ञानिकों की टीम ने केंद्रीय विद्यालय न. 1, रुड़की में कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से वार्तालाप किया और एक शिक्षक की भांति उन्हें विज्ञान के तथ्यों और विज्ञान के विभिन्न विषयों में किए जा रहे नवीनतम कार्यों व तकनीकियों के बारे में जानकारी प्रदान की।

विद्यार्थियों से वार्तालाप करते हुए, डॉ अतुल कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं जिज्ञासा कार्यक्रम संयोजक ने 'भवन निर्माण सामग्री - कल, आज और कल : सीएसआईआर और सीबीआरआई की वैज्ञानिक यात्रा' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए सीएसआईआर और सीबीआरआई के गौरवशाली इतिहास और उपलब्धियों के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि वनस्पति से वांतरिक्ष तक, भवन निर्माण से भू-विज्ञान तक, स्वास्थ्य, रसायन, ऊर्जा आदि जीवन के हर पहलु,

हर क्षेत्र के उत्थान में सीएसआईआर ने अपना योगदान दिया है। इसी दिशा में जीवन के तीन मूलभूत आवश्यकताओं में से एक - आवास के क्षेत्र में सीबीआरआई नित नवीन तकनीकों का विकास करने में अग्रसर है। संस्थान नवीनतम एवं पर्यावरण अनुकूल भवन निर्माण सामग्रियों के साथ-साथ, अपशिष्ट नियंत्रण, भवन कीट एवं कवक, नैनो प्रौद्योगिकी, आपदा पूर्व और पश्चात् जोखिम न्यूनीकरण, भवन निर्माण हेतु दिशा निर्देश एवं मानदंड, ऊर्जा कुशल इमारतें, भवन निरीक्षण और पुनर्वास, विरासत संरचनाओं का अध्ययन, आदि भवन निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दे रहा है। डॉ. अग्रवाल ने संस्थान द्वारा विकसित उन्नत भवन निर्माण सामग्रियों के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए बताया कि लकड़ी के विकल्प के रूप में संस्थान ने कृषि अपशिष्ट से कृत्रिम लकड़ी जैसे चावल

## सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

**सीएसआईआर-राष्ट्रीय** वनस्पति अनुसंधान संस्थान द्वारा 28 फरवरी, 2019 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस दिन संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाएं, वनस्पति संग्रहालय, पुस्तकालय, वानस्पतिक उद्यान आदि आम जनता के लिए खुले रहे। इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम आमजन हेतु विज्ञान एवं विज्ञान हेतु आमजन थी। इस अवसर पर प्रो. एस एन संखवार, विभागाध्यक्ष, यूरोलॉजी विभाग, किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ, समारोह के मुख्य अतिथि थे जिन्होंने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर पुरुष नपुंसकता एवं हर्बल औषधियां विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर श्रोता के रूप में संस्थान के वैज्ञानिक, शोधकर्ता और छात्र उपस्थित थे।

प्रो. संखवार ने संस्थान को उसकी उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुये अपने राष्ट्रीय दिवस व्याख्यान में बताया कि 10 से 15 प्रतिशत युगल संतान सुख से वंचित रह जाते हैं। इनमें से भी लगभग 50 प्रतिशत मामलों में नर नपुंसकता जिम्मेदार होती है लेकिन अधिकांश मामलों में इसका जिम्मेदार महिलाओं को ठहराया जाता है जिससे उनको काफी मानसिक तकलीफ से गुजरना पड़ता है।

इससे प्रभावित लोगों में हार्मोन स्तर में अनियमितता, रोजमर्रा की तनाव भरी जिन्दगी, शारीरिक विकृतियों आदि के चलते शुक्राणुओं की कमी, शुक्राणुओं की गतिविधि में कमी अथवा शुक्राणु निर्जीवता देखी जाती है। उन्होंने बताया बहुत से औषधीय पौधे जैसे अश्वगंधा, शतावर, पिप्पली, कापीकचू, बाला आदि



नर नपुंसकता के उपचार में सहायक हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि उपचार के अतिरिक्त जीवन दिनचर्या में तनाव मुक्ति हेतु कुछ समय स्वयं को दिए जाने, नशे से दूर रहने, नियमित व्यायाम एवं अच्छी नींद लिए जाने की भी आवश्यकता है।

इसके पूर्व एक अन्य कार्यक्रम जिज्ञासा के अंतर्गत छात्र-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन भी किया गया। इसके अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, सीआरपीएफ कैम्पस, बिजनौर एवं केन्द्रीय विद्यालय, ए एम सी, लखनऊ के छात्रों एवं शिक्षकों ने संस्थान का भ्रमण किया।



## सीएसआईआर-एनबीआरआई में लैंगिक जागरूकता एवं कार्यस्थल पर महिला यौन उत्पीड़न: बचाव, निषेध एवं निवारण विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

**सीएसआईआर-एनबीआरआई,** लखनऊ एवं सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र, गाज़ियाबाद द्वारा दिनांक 26 मार्च 2019 को लैंगिक जागरूकता एवं कार्यस्थल पर महिला यौन उत्पीड़न: बचाव, निषेध एवं निवारण विषय पर एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में सुश्री अंजू पाण्डेय, सयुक्त राष्ट्र महिला, प्रो. एल आर अग्रवाल, अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली एवं डॉ. अलोक गोयल मौजूद थे। सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र, गाज़ियाबाद से आये हुए डॉ. आलोक गोयल ने कार्यशाला की भूमिका एवं उद्देश्यों के बारे में सभी को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में वैज्ञानिकों, शोध छात्रों एवं अन्य स्टाफ के करीब 250 से भी ज्यादा लोगों ने भाग लिया।

सुश्री अंजू पाण्डेय ने लैंगिक जागरूकता की आवश्यकता पर चर्चा आरम्भ करते हुए कहा कि उत्पीड़न एवं यौन उत्पीड़न के बीच एक महीन सा अंतर होता है जिसको समझने की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि यौन उत्पीड़न का दायरा काफी बड़ा होता है जिसके अंतर्गत किसी महिला को गलत तरीके से घूरने से लेकर हिंसक व्यवहार एवं बलात्कार तक शामिल है। उन्होंने इस विषय पर दो लोगों के बीच सहमति के आधार पर संबंधों की व्याख्या भी की जिसमें उन्होंने विभिन्न उदाहरणों

के माध्यम से बताया कि न तो किसी महिला के चुप रहने को उसकी सहमति माना जाना चाहिए और न ही किसी एक समय पर किसी एक बात के लिए दी गयी सहमति को आगे हमेशा के लिए या हर बात के लिए सहमति माना जाना चाहिए। उन्होंने इस बात को समझने पर भी बल दिया कि क्यूँ कोई महिला ऐसी किसी घटना पर चुप रहना उचित समझती हैं जिसके पीछे डर एवं भविष्य की चिंता के साथ-साथ अनेकों अन्य कारण भी शामिल हैं।

प्रो. एल आर अग्रवाल ने अपने व्याख्यान में यौन उत्पीड़न के लिए बने अधिनियम के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि यौन उत्पीड़न किसी भी व्यक्ति के मूल अधिकारों के साथ साथ बराबरी के अधिकार, समान रोजगार के अधिकार, पेशा चुनने के अधिकार, जीवन एवं स्वतंत्रता के अधिकार आदि का भी उल्लंघन करता है। उन्होंने बताया कि यौन उत्पीड़न के दायरे में रोकना, पीछा करना, अनुचित शब्दों द्वारा संबोधन, कार्य स्थल पर अनुचित मजाक करना, अश्लील चुटकुले सुनाना या बातें करना, घूरना, भेदे इशारे करना, गलत तरीके से कपड़ों या शरीर को छूना, अश्लील वीडियो का प्रदर्शन, यौन संबंधों के लिए कहना एवं बलपूर्वक बलात्कार आदि सम्मिलित हैं। अपने व्याख्यान में उन्होंने कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग, भारत सरकार द्वारा बने दिशा-निर्देशों की जानकारी भी दी। उन्होंने

बताया कि प्रत्येक नियोक्ता का यह कर्तव्य है कि वह कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न से निपटने के लिए एक कार्य योजना बनाएं जिसमें सभी संभावित परिस्थितियों का आंकलन करते हुए नियम बनाए जाने चाहिये। उन्होंने कहा कि समय-समय पर इस संबंध में जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराना, इस संबंध में गतिविधियों की निगरानी करना एवं आवश्यकता पड़ने पर केस दर्ज कराने की सहूलियत प्रदान कराना भी एक नियोक्ता की जिम्मेदारी है।

### कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

सम्पादक

सीएसआईआर समाचार

ईमेल: [csirsamachar@niscair.res.in](mailto:csirsamachar@niscair.res.in)

## सीएसआईआर-एनईआईएसटी के डॉ एच बी सिंह ने दो राष्ट्रीय पुरस्कार जीते

डॉ एच बी सिंह, वैज्ञानिक प्रभारी, सीएसआईआर-नीस्ट ब्रांच लैबोरेटरी, इम्फाल को दो राष्ट्रीय पुरस्कार (1) प्रिंट मीडिया के द्वारा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संचार में उत्कृष्ट प्रयासों हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार-2018, जिसमें प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिन्ह तथा दो लाख रुपए का नकद पुरस्कार सम्मिलित है तथा (II) विज्ञान रिपोर्टिंग के लिए राजेन्द्र प्रभु स्मृति शील्ड 2018, प्रदान किए गए।

दोनों पुरस्कार राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटी सी), विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (28 फरवरी, 2019) के अवसर पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के कन्वेंशन सेंटर में प्रदान किए गए।

उन्हें ये पुरस्कार प्रो आशुतोष शर्मा, सचिव, डीएसटी द्वारा प्रो. जगदेश कुमार, उपकुलपति, जेएनयू, नई दिल्ली, डॉ निशा मेंदीरता, प्रमुख, एनसीएसटीसी, डीएसटी तथा अन्य की उपस्थिति में दिए गए।

इससे पहले डॉ एच बी सिंह को फैलो ऑफ सोसायटी ऑफ एथनोबोटानिस्ट्स (एफएसई), सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ (2011); यूनाइटेड स्टेट्स एजेन्सी फॉर इंटरनेशनल डिवेलपमेंट (यूएसएआईडी), यूएसए की फैलोशिप तथा अन्तरिक्ष विभाग, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट



सेंसिंग द्वारा जीबी पंत इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन एंवायरमेंट एंड डिवेलपमेंट,

उत्तर-पूर्व, ईटानगर में वर्ष 2000 में वरिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप प्राप्त हुई है।

## सीएसआईआर-एम्प्री ने ईआरपी एवं आर एण्ड डी मॉड्यूल प्रबंधन पर प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला का आयोजन किया

**सीएसआईआर-एम्प्री** में आयोजित कार्यशाला उद्घाटन भाषण में डॉ अवनीश कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, सीएसआईआर-एम्प्री ने बताया कि सीएसआईआर-एम्प्री, ई आर पी, विशेषकर आर एण्ड डी मॉड्यूल तथा बिजनेस विकास मॉड्यूल संबंधी कार्यशाला आयोजित करने वाला सीएसआईआर का पहला संस्थान है। उन्होंने कहा कि ईआरपी का प्रयोग सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में अनिवार्य होने वाला है। पहले यह प्रयोग में लाया जा रहा था लेकिन कुछ तकनीकी कारणों से यह प्रभावी रूप से लागू नहीं हो पाया। अप्रैल, 2019 में जारी सीएसआईआर के नए कार्यालय ज्ञापन के अनुसार यह पोर्टल प्रयोग हेतु अपडेट किया गया है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि संस्थान में जारी परियोजनाओं को ईआरपी से जोड़ना अनिवार्य है। सभी वैज्ञानिक एवं पीआई अपना लॉगइन आईडी इस पोर्टल पर बनाएं और इस पर नई परियोजनाओं प्रकाशनों, पेटेंटों, नोहाऊ/प्रौद्योगिकी आदि की जानकारी दें।

प्रमुख, पीपीडी एवं बीडी, एम्प्री डॉ एस के एस राठौर ने सीएसआईआर-एम्प्री, भोपाल में आर एण्ड डी नियोजन एवं प्रबंधन तथा इस आयोजन, विशेषकर बिजनेस मॉड्यूल के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी ईआरपी को प्रयोग करेंगे। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों को ईआरपी प्रयोग हेतु दिशानिर्देश दिया।

डॉ जे पी चौरसिया, प्रमुख वैज्ञानिक, पीपीडी तथा कार्यशाला के समन्वय सचिव



डॉ अवनीश कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, सीएसआईआर-एम्प्री ने वैज्ञानिकों और तकनीकी अधिकारियों के साथ बातचीत की और वन सीएसआईआर पोर्टल पर आर एण्ड डी मॉड्यूल एवं बी. डी. मॉड्यूल के कार्यान्वयन के महत्व और आवश्यकता की जानकारी दी।



ने लाइव डिमॉन्स्ट्रेशन ऑन मैनेजमेंट ऑफ आर एण्ड डी मॉड्यूल एंड बिजनेस मॉड्यूल ऑफ वन-सीएसआईआर एंड इनफॉर्मेशन

मैनेजमेंट ऑफ ऑनगोइंग प्रोजेक्ट्स पर प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि परियोजना के पी आई/सह-पी आई सी एस आई



कार्यशाला के समन्वय सचिव, प्रधान वैज्ञानिक, पीपीडी, डॉ. जे. पी. चौरसिया आर एंड डी मॉड्यूल तथा बीडी मॉड्यूल के प्रबंधन पर लाइव प्रदर्शन एवं विस्तृत प्रस्तुति देते हुए।

आर-एम्प्री परियोजना कार्यान्वयन के लिए सक्षम अधिकारी द्वारा स्वीकृति एवं पीपीडी द्वारा कार्यालय-ज्ञापन जारी होने के बाद ईआरपीआर एण्ड डी तथा बी डी मॉड्यूल में विस्तृत परियोजना प्रस्ताव जमा करें। उन्होंने बताया कि ईआरपी में सभी जारी परियोजनाओं एवं संबन्धित सूचनाओं का जाना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि पीआई/सह-पीआई से अपेक्षित है कि वे नई परियोजनाओं के विषय में जानकारी आर एण्ड डी मॉड्यूल में भरें तथा प्रकाशन, पेटेंट, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं बीडी परियोजनाओं संबंधी जानकारी वन-सीएसआईआर पोर्टल में बीडी मॉड्यूल में डालें। उन्होंने ईआरपी मॉड्यूल खोलने,

परियोजना विवरण भरने, मासिक-तिमाही रिपोर्ट, परियोजना समाप्ति रिपोर्ट आर एण्ड डी मॉड्यूल में पेटेंट, प्रकाशन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण इत्यादि बीडी मॉड्यूल में डालने का प्रदर्शन किया।

श्री पवन श्रीवास्तव, प्रोटोकॉल अधिकारी ने एचआर मॉड्यूल के अंतर्गत परिचालित की जाने वाली प्रक्रियाओं एवं रोल मैपिंग पर विशेष बल के साथ वन-सीएसआईआर प्रणाली की विशेषताओं को रेखांकित किया।

श्री आर एन वाघमारे, प्रशासनिक अधिकारी ने वन-सीएसआईआर ईआरपी पोर्टल के अपने अनुभवों को साझा किया। प्रणाली को डिजिटाइज करने तथा पारदर्शिता

लाने के उद्देश्य से यह पोर्टल बहुत पहले लागू कर दिया गया था। इसमें अनेक अंग - वैज्ञानिक मॉड्यूल, प्रशासनिक, एचआर एवं वित्त हैं। सीएसआईआर-एम्प्री पहले भी ईआरपी पोर्टल प्रयोग कर चुकी है। श्री वाघमारे ने बताया सीएसआईआर द्वारा अब नए सिरे से पहले की सभी कठिनाइयों को दूर कर इसे पुनः प्रयोग किया जा रहा है। अब एम्प्री में इसे पूरी तरह परिचालित करने के लिए सभी कार्मिकों एवं संस्थान के आँकड़े इसमें डाले जाने हैं, जिसके लिए कुछ अस्थाई स्टाफ की आवश्यकता होगी, श्री वाघमारे ने कहा।

अंत में श्री आर एन वाघमारे ने सभी को धन्यवाद दिया।